an>

Title: Need to bring out a white paper on Uttarakhand tragedy of 2013.

डॉ. रमेश पोखरियाल निशंक (हरिद्वार): सभापति जी, मुझे कृपया बता दें कि कितना समय मुझे बोलेगा।

HON. CHAIRPERSON: I am very sorry. This is not the way. We have extended the time by one hour. We have got about 20 Members yet to speak. Usually you get about one to two minutes. Within that time you have to adjust. So, you have to confine yourself to one to two minutes.

डॉ. रमेश पोखरियाल निशंक : श्रीमन्, अगर इतना कम समय मिलेगा तो मैं समझता हूं कि फिर बोलने का कोई फायदा नहीं है। हम सुबह से लेकर शाम तक इसी इंतजार में बैठे रहते हैं कि हमें महत्वपूर्ण मुद्दे पर बोलने के लिए चार-पांच मिनट भी नहीं मिलेंगे। यदि इतना समय नहीं मिलना है तो मैं बैठ जाता हूं। यदि यह सम्भव नहीं है तो फिर बोलने का कोई फायदा नहीं है, सिर्फ खानापूर्ति नहीं होनी चाहिए।

श्रीमन्, मैं कहना चाहता हूं कि उत्तराखंड पर्यटन की दृष्टि से पृथ्वी पर स्वर्ग है, आध्यात्मिक दृष्टि से दुनिया की राजधानी है और संस्कृति की दृष्टि से देश का प्राण है। जहां पूरी दुनिया से लाखों लोग गंगोतरी, यमुनोतरी, बद्रीनाथ, केदारनाथ, हेमकुंड, कैलास मानसरोवर की यात्रा पर आते हैं। गत् वर्ष केदारनाथ की भीषण त्रासदी ने पूरे देश को हिलाकर रख दिया था। देश के 24 राज्यों को लगभग 20,000 से अधिक लोगों को अपनी जान गंवानी पड़ी थी। जो लोग इस प्रलय से किसी तरह जान बचाकर पहाड़ों के ऊपर भागे थे, उन्हें समय से न निकालने के कारण, वे भूख, प्यास और कड़कती ठंड से मरने को मजबूर हुए। सैंकड़ों कंकाल आज भी वहां के जंगलों में मिल रहे हैं। यह उत्तराखंड सरकार की घोर अव्यवस्था और संवेदनहीनता का पुख्ता प्रमाण है। राज्य सरकार की घनघोर भूल और चूक के कारण परिवारों में एक भी व्यक्ति जिंदा नहीं बचा है। सड़क मार्ग आज भी वैसे ही हैं।

HON. CHAIRPERSON : Please sit down. Nothing will go on record.

*(Interruptions) â€¦**